सेवा और सहिष्णुता के आदर्श

मास्टर प्रभू दयाल



लेखक—

बाबू बैजनाथ गुप्त 'वृजेन्द्र'

युग निर्माण योजना मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI CHANDUBHAI PATEL,
GONDAL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सहयोगी समाज-सेवी—
मास्टर प्रभुदयाल

304

समाज को समुन्नत और सुसंस्कृत बनाने के लिये जो सत्पुरुष अपनी व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं का त्याग कर सेवा कार्यों में जुट जाते हैं, समाज प्रायः उनसे परिचित ही रहता है। उनका नाम भी समाज-सेवियों की समादृत सूची में प्रकाशित होता रहता है। यथापि समाज की सेवा करने वाले केवल उतने ही व्यक्ति नहीं होते, जितने कि प्रकाश में आते हैं या लोग जिनको जानते हैं। इनके अतिरिक्त कुछ समाज-सेवी ऐसे भी होते हैं जो प्रकाशन से परे चुपचाप अपना पुनीत कर्त्तव्य करके चले जाते हैं और लोग कदाचित् ही उनको जान पाते हैं। जान भी पाते हैं तो तब, जब वे दूर, बहुत दूर भूतकाल में जाकर विलीन हो जाते हैं ऐसे मौन सेवक ही निस्पृह कर्म योगियों की कोटि में आते हैं, और परमार्थ पुण्य के सच्चे अधिकारी बनते हैं।

ऐसे ही निस्पृह कर्मयोगियों में एक नाम मास्टर प्रभुदयाल का भी है। मास्टर प्रभुदयाल के विषय में इससे अधिक कदाचित् ही कोई व्यक्ति जानते हों कि उनका जन्म मध्य-प्रदेश के पन्ना राज्य में एक सामान्य कायस्थ परिवार में हुआ था और अभी तीन चार वर्ष पूर्व उनका स्वर्गवास हो गया। किन्तु अब धीरे-धीरे खोजी व्यक्ति उनकी सेवाओं के प्रकाश में उनके विस्तृत जीवन-वृत्त का पता लगाने में तत्पर होने लगे हैं।

इतना पता चल चुका है कि उन्होंने समाज-सेवा में हरिजन-सुधार का कार्य-क्रम अपनाया था और भारत की जरायम पेशा जाति सांसी लोगों की अभूत पूर्व सेवा की थी। उनके प्रकाश-केन्द्र महात्मागाँधी, प्रेरणा-स्रोत ठक्कर बापा और सहायक सहयोगी थी वियोगी हरि रहे हैं। सेवा, सङ्गति और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निस्पृहता के आधार पर सहज ही विश्वास किया जा सकता है कि मास्टर प्रभूदयाल जी अवश्य ही एक महान् और चरित्रवान् व्यक्ति रहे हैं।

मास्टर प्रभुदयाल मध्य-प्रदेश के जिस पन्ना राज्य में उत्पन्न हुए, खेले, खाए और बड़े हुए वहीं रहकर उन्होंने समाज-सेवा का अपना मानवीय कर्त्तव्य पूरा किया। वे जन्म-स्थान से बाहर अपना कार्य क्षेत्र खोजने नहीं गये। "क्या वह इज्जत उसे मिली जो वतन से निकल गया।"—सिद्धान्त वाले व्यक्ति वे नहीं थे। न उन्हें धन का लोभ था और न मान-सम्मान की स्पृहा। सेवा-भाव के धनी सत्पुरुष होने के नाते वे तो केवल जन-सेवा ही करना चाहते थे, जो कहीं भी, जहाँ उसकी आवश्यकता हो, की जा सकती थी। उसके लिए देश-विदेश का कोई अन्तर नहीं पड़ता। आज भारतीय समाज की जो दशा है, उसके देखते कदम-कदम पर जन-सेवाओं की आवश्यकता और उपयोगिता है। सामाजिक जीवन का ऐसा कौन-सा क्षेत्र और कौन-सी दिशा है जिसके विषय में यह कहा जा सके कि यहाँ पर सब कुछ ठीक चल रहा है, यहाँ पर किन्हीं सुधार-सेवाओं की आवश्यकता नहीं है। समाज का सांगोपांग कायाकल्प वांछित है और उसकी आवश्यकता आज जन-जन की सेवाओं के लिये एक आवाहन है। जिसका समुचित एवं सानुकूल उत्तर सक्रिय रूप में दिया जाना चाहिये। मास्टर प्रभुदयाल जी इस सत्य को खुली आँखों देख रहे थे और उनकी निष्ठा भी उसमें आंशिक नहीं पूर्ण और सम्पूर्ण थी।

मास्टर प्रभुदयाल जी ने जब हरिजन वर्ग की सेवा और सुधार को अपना जीवन लक्ष्य बनाया तो उन्हें समाज के प्रतिक्रियावादियों और प्रतिगामियों के प्रश्नों का भी लक्ष्य बनना पड़ा। उनसे प्रश्न हुआ कि आखिर समाज के अन्य अनेक क्षेत्र छोड़ कर अपने इन अछूत लोगों की सेवा का कार्यक्रम क्यों अपनाया? इससे क्या समाज और जाति में आपको निन्दा और भर्त्सना का पात्र नहीं बनना पड़ेगा! मास्टर प्रभुदयाल का उत्तर था—

"ऐसा तो मैं नहीं समझता कि इस नेक कामके लिए समाज में मेरी निंदा की जायेगी। यदि निन्दा हुई भी तो मेरा अपना विश्वास कहता है कि निंदक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जन कुछ उन्हीं लोगों से मिलते-जुलते लोग होंगे जो या तो सामाजिक जीवन की अच्छाई-बुराई से अनभिज्ञ होते हैं, जिनका मस्तिष्क पूर्वाग्रही होता है, जिनके संस्कार नूतन प्रकाश के विरोधी होते हैं, अथवा समाज की पतित दशा से जिन्हें कुछ व्यक्तिगत लाभ होता है। ऐसे प्रतिवादी लोग स्तरीय मनुष्य नहीं होते। अस्तु, उनकी निन्दा उपेक्षणीय ही मानी जायेगी।"

"दूसरी बात यह कि निन्दा हमारे आज जैसे समाजों की सहज वृत्ति बन गई है। कोई बात निन्दनीय है या नहीं—इस पर विचार करना तो दूर, वह यह भी नहीं सोच पाता कि वह निन्दा क्यों कर रहा है और उसके निन्दा करने का कोई सार्थक उद्देश्य भी है या नहीं? वह तर्कवृत्ति का सन्तोष करने के लिये निन्दा-निन्दा के लिए ही करता है। इस प्रकार की निरर्थक बात को, किसी शुभ कार्य के बीच महत्त्व देना मेरे विचार में, आवश्यक नहीं हैं।'

"जिस दिन समाज-सेवा का मेरा विचार निश्चय के रूप में परिपक्व हुआ—निन्दा, प्रशंसा, आत्म-श्लाघा, मान-सम्मान, कष्ट और आराम से सम्बन्धित अपनी अहङ्कारिक दुर्बलता को निकाल कर रख दिया था। मेरा एक सङ्कल्प है, एक व्रत है, जिसका पालन मुझे करना ही है। अब उसके उपलक्ष में मुझे जो भी निन्दा, तिरस्कार, पीड़ा अथवा यातना मिलेगी उसे सहर्ष स्वीकार करूँगा।"

आपके प्रश्न का यह अंश निस्सन्देह महत्वपूर्ण है कि आखिर मैंने हरिजन वर्ग को ही अपनी सेवायें क्यों समर्पित की हैं? इसके उत्तर में मैं केवल इतना ही निवेदन कर सकता हूँ कि हरिजन वर्ग हमारे समाज का एक बड़ा भाग है। उसकी दशा समाज के अन्य किसी भी वर्ग की अपेक्षा कहीं अधिक पतित और दयनीय हैं। वह आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, चारित्रिक, नैतिक और पारिवारिक रूप से बहुत पिछड़ा हुआ है। धार्मिक रूप में तो, अन्ध-विश्वासों, भ्रांत धारणाओं और अविश्वास के कारण वह पूरे समाज पर एक अभिशाप ही बना हुआ है। अपने समाज के इस विशाल वर्ग को देख कर ही अन्य लोग हमारे सामाजिक तथा धार्मिक स्वरूप का अनुमान करते और तदनुसार ही मूल्यांकन करते हैं। इसी किनारे से कतिपय अवांछनीय तत्व

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपने समाज को काटने, घटाने, गिराने और मिटाने का प्रयत्न करते हैं। हरिजनों की वर्तमान दुर्दशा हमारे सम्पूर्ण समाज की एक गहरी निर्बलता है जिसका सुधार सञ्चरित करना परोक्ष नहीं, सम्पूर्ण समाज की एक प्रत्यक्ष सेवा था, हमारा हरिजन वर्ग यदि समान रूप से शिक्षित, शुद्ध, प्रबुद्ध और दृढ़ होकर खड़ा हो जाये तो हमारे पूरे समाज की शक्ति में कम से कम दो से तो गुणा हो ही जाये—क्या ऐसा विश्वास कर सकना असङ्गत अथवा अस्वाभाविक होगा ?''

प्रश्नों के इन उत्तरों में मास्टर प्रभुदयाल के सारे विचार, विश्वास, भावनायें, मान्यतायें और दृढ़ताएँ प्रतिबिम्बित हो उठती थी। विरोधी और आलोचक उस समय तो निरुत्तर होकर उनका मार्ग छोड़ देते थे और वे हरि-सेवा के समान हरिजन सेवा के लिये निष्ठापूर्वक अपनी राह लग लेते थे।

प्रारम्भ में तो वे लगभग दिन भर ही हरिजन बस्तियों में किसी न किसी मिष से बने रहते थे। इस पूरे दिन में से वे केवल उतना ही समय अलग करते थे जो जीविका, नित्य-क्रियाओं और अध्ययन के लिए आवश्यक होता था अथवा जो समय असमय की सीमा में आता था। बाकी का सारा समय वे हरिजनों का गतिविधि और उनके सुधार की आवश्यकताओं का अध्ययन करने में समर्पित कर देते थे। यह समयदान उनके कार्य के प्रति जिज्ञासा तथा संलग्नता का द्योतक था।

उपयुक्त समय तक अध्ययन, वार्ता और संसर्गता के पश्चात् वे हरिजनों की पतितावस्था के जिन कारणों पर पहुँचे उनमें से अशिक्षा को उन्होंने मुख्य कारण माना। हरिजनों की दयनीय दशा का आधार भूत कारण अशिक्षा को उन्होंने सहसा ही किसी आग्रह, मोह अथवा भावुकता से प्रेरित होकर ही नहीं माना बल्कि वे खूब सोच-विचार कर इस निर्णय पर पहुँचे थे। अनेक बार उन्होंने वार्तालाप के क्रम में लोगों को बताया कि बहुत दिन तो मैं हरिजनों के सुधार का आधार अर्थ को मानता रहा—सोचता था कि यदि इनके लिए अधिक आय का साधन और अच्छे-अच्छे शिल्पों की व्यवस्था हो सके तो इनका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सुधार आप से आप होने लगे। किन्तु मेरे दूसरे विचार ने इस विचार की निस्सारता को जल्दी ही प्रकट कर दिया। मैंने सोचा—

अर्थोन्नति हो जाने से भले ही इनका ऊपरी रहन-सहन कुछ सुधर जाये। लेकिन उससे नैतिक अथवा चारित्रिक सुधार किस प्रकार सम्भव हो सकता है। उसके लिये तो मन, मस्तिष्क और आत्मा के परिष्कार की आवश्यकता है। मनुष्य को मानवीय तथा सामाजिक चेतना की उपलब्धि तो विचार मार्ग से ही हो सकती है और विचारों का विकास एक मात्र शिक्षा एवम् दीक्षा पर निर्भर है। इसके अभाव में बहुधा धन की सुविधा और भी घातक बन जाती है। धन चरित्र को उठाने वाला तो हो ही नहीं सकता, गिराने वाला भले ही हो जाये। किन्तु शिक्षा जहाँ चरित्र को उठाती है वहाँ अर्थोन्नति की सम्भावनायें भी सहज बना देती है। एक शिक्षा से ही दोनों आवश्यक कार्य सध जाते हैं। अस्तु मैंने हरिजनों के बीच अर्थ विकास से पूर्व ज्ञान विकाश को ही प्राथमिकता देना उचित समझा। अज्ञानावस्था में इनके लिये आर्थिक आयोजन का प्रयत्न करना उनकी जीवन-विधि में अधिक फिसलन पैदा करने जैसी अबुद्धिमत्ता होती। फिर एक सबसे बड़ी बात यह थी कि मेरी जो कुछ थोड़ी बहुत सामर्थ्य थी उसके द्वारा शिक्षा प्रसार ही मेरे लिये सरल था, अर्थायोजन नहीं। अपनी शक्ति के अनुसार ही किसी कार्य का बीड़ा न उठाने वाले साधनों की खोज में ही सारा समय निकाल देते हैं, यथार्थ में कुछ कर सकने के सन्तोष से वञ्चित रह जाते हैं। मुझे तो अंश दो अंश समाज सेवा करनी ही थी इसलिये मैंने वह ही शुरू किया जिसकी हरिजनों को आवश्यकता भी थी और जिसे मैं कर सकता था।

अपने सम्पर्क क्रम में उन्होंने कुछ प्रगतिशील हरिजन भाइयों को खोज भी निकाला था और कुछ अधकचरों को बना भी लिया था, कुछ में नये संस्कारों के बीज भी डाल दिये थे। एक दिन अवसर पाकर उन्होंने अपना मन्तव्य प्रकट करते हुए बच्चों की एक पाठशाला की बात चला दी। बात तो विरोध योग्य नहीं थी। अस्तु, विरोध तो नहीं हुआ, तथापि प्रतिक्रिया हुए बिना नहीं रही। बुद्धि समस्त होने पर भी, कुसंस्कारी और दुराग्रही मन ने,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किसी अच्छी बात और वह भी सई-सी, का विरोध करना अपना अधिकारपूर्ण धर्म समझता है। तभी तो बुद्धिमान लोग ऐसे समय में इसकी इतनी कठोर उपेक्षा कर देते हैं जैसे गम्भीर गति से अपनी राह जाता हुआ गजराज भूँअते हुए बाजारू कुत्तों की अपेक्षा कर देता है अथवा मनीषी महात्मा किसी अज्ञानी का कथन इस कान सुनकर उस कान निकाल देता है।

अनेक उपस्थित हरिजनों की प्रतिक्रिया निराशापूर्ण पशु के रूप में मुखर हुई—"हमारे अथवा हमारे बच्चों के लिए शिक्षा की जरूरत ? मास्टर साहब ! आप भी अजीब बात करते हैं। पढ़-लिखकर हमको या हमारे बच्चों को क्या मिल जायेगा ? जो आज करते हैं वही तब भी करेंगे। हाँ इतना तो जरूर होगा कि पढ़-लिख कर बच्चे बिगड़ जायेंगे, बाबू बन जायेंगे, निकम्मे और काम चोर हो जायेंगे। आप ऐसी सीख हम लोगों को न दें, यही अच्छा है।"

मास्टर प्रभुदयाल की आत्मीयता दुःख और सहानुभूति से द्रवित होकर आँखों में झलक उठी। वे मन ही मन व्यथित होकर कह उठे—"आह ! हमारे यह भाई अज्ञान में किस गहराई तक गिरे हुए हैं ? इन्हें शिक्षा और दीक्षा की कितनी आवश्यकता है ? क्या इसको समाज का उन्नत वर्ग अनुभव करके किसी कर्तव्य की प्रेरणा पा सकेगा ? यह अशिक्षा का ही तो कारण है जो ये लोग शिक्षा के सम्बन्ध में इस प्रकार से हीन और निराशपूर्ण विश्वास रखते हैं।

मास्टर प्रभुदयाल इन प्रश्नोक्तियों के लिए पहले से ही तैय्यार थे और अध्ययन के आधार पर जहाँ उन्होंने सृजन कार्यक्रमों को रूप रेखा समझ-बूझ ली थी वहाँ ऐसी शङ्काओं के समाधान भी तैय्यार कर लिये थे। अध्ययम का उद्देश्य भी तो यही होता है, आत्म-ज्ञान के साथ उस ज्ञान की भी उपलब्धि जो दूसरों को अज्ञान के गर्त से निकालने में सहायक हो। उन्होंने उस अवसर पर शिक्षा और ज्ञान के महत्व पर प्रकाश डालना जरूरी समझा—बड़ी आत्मीयता के साथ बोले—

"इसमें तो किसी प्रकार की असहमति हो ही नहीं सकती कि आज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपने हरिजन भाइयों की दशा अच्छी नहीं है। वे समाज में बहुत पिछड़े माने जाते हैं। समाज के अन्य वर्ग उन्हें समानता का अधिकार देने में कृपणता करते हैं। उनमें शराब, जुआ,--बुरा न मानियेगा--मांस-खोरी, लड़ाई झगड़ा, अन्ध-विश्वास, पशु-बलि, गन्दगी आदि न जाने कितनी विकृतियाँ पाँव जमाये पड़ी हैं। हम सब बराबर देखते आ रहे हैं कि हरिजन भाई न तो अपने जन्म सिद्ध अधिकारों के प्रति जाग्रत हैं और न अपने सामाजिक अथवा नागरिक कर्तव्यों के प्रति प्रबुद्ध ! एक लम्बे युग से वे जिस दशा में पड़े हैं। उसी दशा में पीढ़ी दर पीढ़ी से चलते आ रहे हैं। प्रगति अथवा उन्नति के कोई भी लक्षण दृष्टि गोचर नहीं होते। इस दशा मे आगे के लिए भी कोई आशा नहीं की जा सकती। यही सब बातें तो उनका पिछड़ापन है, जिससे वे समाज में हेय दृष्टि से देखे जाते हैं। जानते हैं इसका कारण क्या है? इस सब का एकमात्र कारण है अशिक्षा एवम् अविद्या। इसके दूर होते ही जीवन में दिव्य प्रकाश का आविर्भाव हो जाता है और प्रगति के पथ आप से आप आलोकित होते जाते हैं। इसीलिये तो अपने वेद-शास्त्रों में ज्ञान की बड़ी महिमा बतलाई गई है।"

आज हम सब जो विकृतियों, विकारों, वासनाओं, व्यसनों, गन्दी और गौरव-हीनता के गर्हित जीवन में नरक जैसा अनुभव करते हैं वह सब अज्ञान के कारण ही तो है। स्वर्ग और नरक और कुछ नहीं, मनुष्य के ज्ञान और अज्ञान का परिणाम है। ज्ञानी मनुष्य के लिए यह संसार ही स्वर्ग है। वह जहाँ भी रहता है स्वर्गीय वातावरण का सृजन कर लेता है और अज्ञानी को पग-पग पर अपने दुष्कृत्यों और दुर्विचारों के कारण नरक जैसी पीड़ाओं का सामना करना पड़ता है। तभी तो वेद भगवान् ने निर्देश किया है--"आरोह तमसो ज्योतिः"--अज्ञान के अन्धकार से निकल कर ज्ञान के प्रकाश की ओर बढ़ो।"

"ज्ञान मनुष्य के चरित्र और व्यावहारिक जीवन को उत्कृष्ट बनाता है। ज्ञानी अपने बाह्य और आन्तरिक दोनों जीवनों को पवित्र बनाकर सच्ची मनुष्यता की प्राप्ति कर लेता है। इसके विपरीत अज्ञान जीवन के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लिये एक अभिशापपूर्ण अभाव है। जीवन की समस्त विकृतियों, दुःख-सुखों, उलझनों, अभावों और समस्याओं का एकमात्र कारण मनुष्य का अपना अज्ञान ही है। यही मानव-जीवन की अवाँछनीय कुरुपता और अपरुपता का भी कारण है। कुरुपता का सम्बन्ध मनुष्य की शारीरिक बनावट से उतना नहीं है, जितना अज्ञान और अविद्या से उत्पन्न होने वाली बुराइयों से। अज्ञान मनुष्य का बहुत बड़ा शत्रु है। इससे छुटकारा पाते ही जीवन में चारों ओर सुधार एवम् सुन्दरता का समावेश होने लगता है।"

"इस उन्नत ज्ञान की पहली सीढ़ी है शिक्षा। शिक्षा के बिना ज्ञान की ओर एक पग भी नहीं बढ़ा जा सकता। शिक्षा न होगी तो कैसे तो अध्ययन किया जा सकता है और कैसे सत्सङ्ग का लाभ उठाया जा सकता है? शिक्षा में केवल ऊँचे ज्ञान के लिए ही आवश्यक है वह सामान्य जीवन के लिये भी तो उपयोगी होती है। शिक्षा से ही मनुष्य के मन और मस्तिष्क का विकास होता है। उसी से मनुष्य की योग्यताएँ जाग्रत होती हैं शिक्षित व्यक्ति एक छोटा-सा काम भी इतनी निपुणता से कर दिखाता है कि उसका मूल्य अशिक्षित द्वारा किये गये बड़े बड़े काम से अधिक आंका जाता है। शिक्षा के अभाव में मनुष्य के भीतर रहने वाली शक्तियाँ वैसे ही बेकार चली जाती हैं जैसे बिना तैयार किये हुए खेत में पड़े बीज बेकार चले जाते है। शिक्षा के बिना हित-अहित, कर्तव्य, अधिकार का बोध नहीं हो पाता और न मनुष्य सामाजिक, राजनीतिक अथवा प्रशासनिक क्षेत्रों में अपना स्थान ही बना पाता है। मान, सम्मान अथवा समानता की जो भी सुखदायक स्थितियाँ हैं वे सब शिक्षा के आधार पर ही प्राप्त होती हैं। शिक्षा मानव-जीवन के लिये अमृत के तुल्य ऐसा तत्त्व है जो मानव पशु को देवता की कोटि में पहुंचा देता है। इसलिये मेरा निवेदन है कि आप लोग शिक्षा के सम्बन्ध में अपने नीचे विचारों को ऊँचा उठायें। खुद पढ़ें और बच्चों को पढ़ने का अवसर दें। अपने मस्तिष्क से यह विचार निकाल दें कि शिक्षा पाकर बच्चे बाबू बनकर निष्क्रिय हो जायेंगे। शिक्षा किसी को निष्क्रिय नहीं बनाती है, वह तो सक्रियता की एक जीवित प्रेरणा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है। मनुष्य को निष्क्रिय बनाते है उसके व्यसन, विकार और आलस्य, प्रमाद आदि के दोष। यह जिसमें भी होंगे वह निकम्मा बन ही जायेगा। फिर चाहे वह शिक्षित हो अथवा अशिक्षित आलस्य आदि पापों का परिणाम निष्क्रियता को शिक्षा जैसे पुण्य पर आरोपित करना अन्याय है जो हम या आप किसी को भी नहीं करना चहिये और बच्चे पढ़-लिखकर क्या करेंगे उनकी स्थिति में क्या सुधार होगा? यह तो भविष्य की बात है उसे भविष्य पर ही छोड़ कर अपने वर्तमान कर्तव्य में लग जाना चाहिये। उपस्थित उदाहरण और इतिहास के प्रमाण, इस सन्देह को समूल नष्ट कर देने के लिये सर्वथा पर्याप्त है कि जब शिक्षा की प्रगति और विद्या के विकास से संसार के बड़े-बड़े पिछड़े राष्ट्रों ने बात की बात में अग्रस्थान प्राप्त कर लिया है तब हरिजनों का एक वर्ग अपना उत्थान अथवा विकास क्यों नहीं कर सकता? कर सकता है अवश्य कर सकता है--इस विश्वास के साथ हमारा सहयोग करिये और शिक्षा के शुभारम्भ का श्रीगणेश होने दीजिये।"

उन अशिक्षितों तथा रूढ़िवादी हरिजनों ने मास्टर प्रभुदयाल का यह वक्तव्य समझा हो अथवा पूरी तरह न समझ पाये हों परन्तु उन पर उसका एक गहरा प्रभाव जरूर पड़ा। उन्हें अच्छी प्रकार यह विश्वास हो गया कि मास्टर साहब एक विद्वान् व्यक्ति हैं, और हरिजनों के एक सच्चे हितैषी। ज्ञानपूर्ण, उन शब्दों में, जो सद्भावना के साथ हृदय से निकलते हैं, एक ऐसा सूक्ष्म प्रभाव होता है जो अनभिज्ञ श्रोता की आत्मा में उन्नत अनुभूति का जागरण कर देता है, जिसे वह बुद्धि गम्य भले ही न बना सके, तथापि अपने राज्य में कुछ अभूतपूर्व ध्वनि की प्रेरणा अवश्य अनुभव करने लगता है जिससे उसके संस्कारों में सदाशयता से सामंजस्य उत्पन्न होने लगता है। ज्ञान में निश्चय ही बड़ी परिवर्तनकारी शक्ति होती है।

प्रभावित हरिजनों ने आदरपूर्वक सहमत होकर मास्टर प्रभुदयाल के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और उन समाज सेवी के प्रयत्न वांछित दिशा में चल पड़े। शुभ काम में देर का क्या काम? मास्टर साहब ने उसी समय कुछ बच्चे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पढ़ाई के लिये छाँट लिये और दूसरे दिन पाँच बजे शाम को तैयार रहने का निर्देश देकर चले गये।

मास्टर प्रभुदयाल का बड़ी उत्सुकता से दूसरा दिन कटा और शाम आई। लोगों ने देखा कि मास्टर साहब आज एक टाट का बड़ा-सा पुलन्दा और लालटेन लिये बड़ी जल्दी-जल्दी कहीं जा रहे हैं। किन्हीं-किन्हीं ने पूछा भी--"मास्टर साहब आज यह बोरिया-बिस्तर किधर लाद दिया?" पर मास्टर को न तो उस समय कुछ सुन सकने की फुरसत थी और न उत्तर देने की। उनके कान भी इस समय ध्यान का साथ दे रहे थे। लोगों ने उत्तर की ज्यादा परवाह भी नहीं की। वह इसलिये कि प्रायः लोग उन्हें सनकी समझते थे।

मास्टर साहब हरिजन बस्ती में पहुँचे और यह देख कर प्रसन्नता से पुलकित हो उठे कि बच्चे आज अपेक्षाकृत कुछ साफ कपड़े पहने उनका इन्तजार कर रहे हैं। शायद आज दिन में उनकी माताओं ने कपड़े फींच दिये थे। प्रारम्भ देखकर उन्हें विश्वास हो गया कि वे अपने उद्देश्य में सफल अवश्य होंगे। उनका रास्ता भर का यह सोचना किसी जरूरत का सिद्ध नहीं हुआ कि यदि बच्चे तैयार न मिले तो वे न तो बुरा मानेंगे और न किसी से कोई शिकवा शिकायत करेंगे। चुपचाप उपयुक्त स्थान पर फट्टा बिछाकर घरों पर जा-जा कर बच्चों को प्यार से बुला लायेंगे और उन्हें कोई ऐसी कहानी सुनायेंगे जिससे अगले दिनों के लिये उनमें उत्सुकता जग जाये।

लेकिनवहाँ तो सब पहले से ही तैयार प्रतीक्षा कर रहे थे। मास्टर साहब को देखकर तो बच्चे कुछ शरमाये जरूर लेकिन फिर किसी ने जय राम की, किसी ने जय रामजी की, किसी ने पालागन किया तो किसी ने दंडवत और नमस्ते कही यह पाठ भी शायद उनको उनकी माताओं ने ही सिखाया होगा। क्योंकि पिता तो सबेरा होते ही काम पर चले गये होंगे उन्हें अवकाश भी न मिला होगा, और फिर इस समय माताएँ द्वारों में खड़ी बच्चों को देख रही थीं और खुश हो रही थीं। माताओं को सृजन कार्यों में पुरुषों की अपेक्षा कुछ रुचि अधिक होती भी है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मास्टर प्रभुदयाल ने फट्टे का पिण्डा खोला और उनके प्यारे छात्र उसे बिछाने में जुट गये। मास्टर साहब को शाबाशी के साथ बिछावन बिछ गया और वे पंक्ति में बच्चों को बिठाकर खुद भी उसी पर बैठ गये। सबसे पहले उन्होंने एक-एक करके सबके नाम पूछे साथ में पिता का नाम भी। बच्चों ने लजाते-शरमाते और एक दूसरे की ओर देखते हुये बताये और मास्टर साहब ने शाबाशी देकर सुधार किया कि बच्चो ! अपने माता-पिता का नाम बतलाते समय 'श्रीमती' 'श्रीमान्' अथवा श्री लगाना चाहिये, लेकिन अपना नाम बतलाते समय नहीं। इसी प्रकार जब किसी दूसरे का नाम लेना हो तो उसके पहले 'श्री' जरूर लगाना चाहिये। उन्होंने इसका एक बार और अभ्यास कराया और तब पाठशाला की कायवाही का उद्घाटन शुरू कर दिया।

यह उद्घाटन परमात्मा की एक छोटी-सी प्रार्थना से किया जिसे मास्टर साहब कहते गये और बच्चे दोहराते गये। प्रार्थना का सब मिला कर मोटा-सा आशय यह था कि––"हे परम पिता परमात्मा ! तू हमें सद्बुद्धि दे जिससे हम विद्या प्राप्त कर सकें और उसका उपयोग संसार की सेवा में कर सकें।" तू हमें संसार की हर बुराई से बचा, क्योंकि हम सब तेरी ही अबोध सन्तानें हैं और तेरी ही शरण आये हैं। हम पर ऐसी कृपा कर कि हम सद्गुणी, सदाचारी और पुरुषार्थी बन कर जीवन में दिन-दिन उन्नति करते जायें। अन्त में हम तुझे मानव शरीर देने के लिये धन्यवाद देते हैं और फिर प्रार्थना करते हैं कि हमें ऐसी शक्ति दे जिससे कि हम इस उपहार को सार्थक तथा सफल बना सकें।"

प्रार्थना के बाद मास्टर साहब ने बच्चों से पता किया कि क्या किसी के पास स्लेट, तख्ती अथवा किताब आदि हैं ? लेकिन सबों से नकारात्मक उत्तर मिला। मास्टर साहब ने मन ही मन कहा––कोई चिन्ता नहीं मैं सब कर लूँगा। अनन्तर उन्होंने बच्चों को शिष्टाचार की कुछ और भी मोटी-मोटी बात बताई। जिनमें माता-पिता से व्यवहार करने और गाली न बकने की शिक्षा प्रमुख थी। इसी प्रकार उन्होंने लगभग एक घण्टे तक बच्चों का मनोरञ्ज और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शिक्षण करने के बाद छुट्टी कर दी और फट्टा तथा लालटेन पास के ही एक घर में रख दिया।

बच्चे चले गये। लेकिन मास्टर साहब ने उनके माता-पिता से मिलकर यह पता लगाया कि कौन बच्चे को पढ़ाई के लिये—पट्टी, बोदिका और किताब के लिये खर्च कर सकता है और कौन नहीं? जो-जो अभिभावक खर्च कर सकते थे उनसे पैसे ले लिये, दे देने का वचन ले लिया और दूसरे दिन के लिये बच्चों को तैयार रखने को कह कर चले गये।

उस दिन रात से ही मास्टर प्रभुदयाल ने अपने मित्रों तथा समाज-भावी लोगों से मिलना और हरिजन बालकों को शिक्षा सम्बन्धी सामग्री की सहायता करने के लिये कहना शुरू कर दिया। उन्हें जो कुछ भी मिला—पट्टी बोदिका, पुस्तक आदि—सब लेते गये। जिसने नकद पैसा दिया उसे उन्होंने एक हाथ लिखी रसीद भी दी। इसके साथ ही हरिजन-समाज कल्याण और अन्य जन संस्थाओं को प्रार्थना-पत्र देकर अपने पास से भी कुछ धनराशि शामिल की!

इस प्रकार जो कुछ सञ्चय हो पाया उससे दूसरे दिन किताबें आदि लेकर वे ठीक समय पर पाठशाला जा पहुंचे। बच्चों ने पुनः अपने अपने प्रकार के अभिवादन किये। किन्तु आज उन्होंने सर्व सम्मति से एक-हाथ जोड़ कर नमस्ते का, अभिवादन निश्चित कर दिया और बता दिया कि आने पर और जाने पर दो बार नमस्ते किया करें। आज की शिक्षा पुस्तक के अक्षरों तथा चित्रों द्वारा शुरू हुई और उसी पर बात-चीत के साथ समाप्त भी और तब अगले दिनों से धीरे-धीरे विधिवत् अक्षर ज्ञान का क्रम प्रारम्भ हो गया जो चलता और विकास करता ही गया। समय आया और गिनती, पहाड़ों के साथ मास्टर साहब की वह हरिजन-बाल-पाठशाला पूरी तरह से चलने लगी और जनता में जानी जाने लगी।

पाठशाला तो चल पड़ी, लेकिन अभी उसमें ब्लैकबोर्ड, लहू खडिया, पट्टियाँ आदि बहुत सी चीजों की कमी थी। फिर पाठशाला के छात्रों की संख्या यहीं पर तो रुक नहीं जानी थी। उसे बढ़ना ही है और तदनुसार उसके लिये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सामान और अधिक व्यय की भी व्यवस्था करनी होगी। अस्तु उन्होंने विभागों और संस्थाओं के साथ व्यक्तियों के द्वार की खाक छान डाली जहाँ-जहाँ से सहायता की आशा थी। वे भागते-दौड़ते और कुछ न कुछ कोष तथा भण्डार की वृद्धि करते ही रहे। अब उनके मस्तिष्क में उनकी वह छोटी-सी पाठशाला एक व्यवस्थित विद्यालय का रूप लेने लगी थी।

सत्कर्मों में विज्ञापन की एक अपनी शक्ति होती है। मास्टर प्रभुदयाल की पाठशाला को प्रसिद्ध होते देर नहीं लगी। अब तो लोग आते और दूर से खड़े-खड़े देखने लगे। जहाँ बहुत से लोग हरिजन बस्ती की उस पाठशाला को देख कर सिहाते थे वहाँ कुछ ऐसे लोग भी थे जिन्हें वह सत्कार्य देखे नहीं सुहाता था। समाज हितैषी लोगों में चरचा होती कि मास्टर साहब ने यह बड़ा अच्छा काम शुरू किया है। इसकी बड़ी आवश्यकता थी। हम लोगों को भी मदद करनी चाहिये, जिससे पाठशाला के लिये कुछ छाया और आड़ हो जाय। इधर समाज विरोधी जलते और आपस मे कहते—"यह तो प्रभुदयाल ने बड़ा बुरा काम शुरू कर दिया। इससे तो यह अछूत आगे चलकर शिर पर चढ़ेंगे। बराबरी का दावा करेंगे। दबाव नहीं मानेंगे। समाज की सारी व्यवस्था बिगड़ जायेगी। हम लोगों को कोशिश करके इस पाठशाला को बन्द करा देना चाहिये।

समाज का यह द्वन्द्व भाव और कुछ नहीं—शिव और अशिव, सत् और असत्, प्रगति और प्रतिगमन की टक्कर थी। इसका परिणाम और कुछ नहीं निश्चय ही असुरत्व पर देवत्व की विजय ही होती है। युग-युग से यही क्रम चला आया है और शायद तब तक चलता रहेगा जब तक सतत्व की सर्वसत्ता में युग परिवर्तन नहीं हो जायेगा। समाज का यह द्वन्द्व, यह विषमता, विशेषतया इस बात की परख-पट्टिका की होती है कि शिव-शिविर में अब कितनी जन-शक्ति सञ्चय हो गई है और पुण्य पुरुषार्थ में कितने और किस कोटि के प्राण प्रतिष्ठित हो रहे हैं?

मास्टर प्रभुदयाल को स्थिति का पता था। वे विरोध से अभिज्ञ नहीं थे और यह भी जानते थे कि वह उनके लिये किस सीमा तक कष्टदायक और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हानिकारक हो सकता है । किन्तु अपने कर्त्तव्य की चिन्ता छोड़ कर उन्हें लोकापवाद अथवा आरोप की देख-रेख करने की फुरसत नहीं थी । इसकी चिन्ता तो वे तब करते जब उस सेवा कार्य में उनका कोई चोर मन्तव्य निहित होता । जब खरे, त्याग और निःस्वार्थ भावना पर ही उनकी सेवा की नींव रखी हुई थी और उस सेवा की समाज के लिये विशेष सार्थकता थी तब चिन्ता का क्या अर्थ था और यदि ऐसी स्पष्ट और पवित्र स्थिति में भी कोई लोकारोप अथवा व्यर्थ-विरोधियों से भयभीत होता है तो उसे कायर के सिवाय और कुछ नहीं माना जा सकता । ऐसे कायर व्यक्ति संसार में कुछ नहीं कर सकते और यदि कुछ करने के लिये कदम उठाते भी हैं तो पहले संकट में ही पीछे हटा लिया करते हैं । किन्तु मास्टर प्रभुदयाल तो उन परमार्थियों में थे जो समाज का विष पीकर भी उसे अमृत देते रहने में ही महानता और मानव-जीवन की सार्थकता समझते थे ।

समाज की दोनों प्रवृत्तियाँ सक्रिय हो चलीं । एक ओर तो छप्पर छानी और दीवारों के लिये बाँस, बल्ली, फूस, रस्सी और मिट्टी, ईंट आने लगीं और दूसरी ओर मास्टर प्रभुदयाल के पतित, पापी, धर्म-भ्रष्ट और मेहतर हो जाने का नारा आन्दोलन का रूप लेने लगा । उनके पास शिष्ट-मण्डल आने और स्कूल बन्द करने का दबाव डालने लगे । मास्टर प्रभुदयाल ने उन शिष्ट-मण्डलों को अशिष्ट-मण्डल से ज्यादा कुछ नहीं समझा और हाँ-हूँ करके उनकी उपेक्षा करदी ।

व्यर्थ विरोधियों के पास समय की कमी तो होती नहीं । कोई नेक काम न रहने से समय की कमी हो भी कैसे सकती है । उन्हें तो निन्दा करने का ही एक काम रहता है, जिसमें कुछ लगता तो है नहीं और न नैतिक उत्तर-दायित्व का कोई शासन-अनुशासन होता है । जहाँ हुए वहीं अपनी अनर्गल जुबान चलती करदी । झूँठी और निराधार घटनायें गढ़ने और असम्भाव्य आशङ्काओं की कल्पना करते भी उन्हें कोई श्रम नहीं होता—श्रम तथा योग्यता की आवश्यकता होती है सत्य, शिव और सुन्दर, कल्पनाओं, सृजन तथा हित-कारी योजनाओं का मूर्तिमान रूप देने में पाखण्डियों ने जल्दी ही अपने दल बना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लिये और प्रतिक्रियायें भी तेज कर दीं। किन्तु सहायक सीमा और सामर्थ्य के अन्तर्गत अपना काम धीरे-धीरे कर रहे थे। ध्वंस के समान रचना का कार्य जल्दी होता भी कहाँ है ?

जब तक हरिजन-बाल-विद्यालय के लिये फूस की छाया और मिट्टी की कच्ची ईंटें आड़ बनीं तब तक समाज विरोधियों ने मास्टर प्रभुदयाल के परिवार सम्बन्धियों और जाति-बिरादरी के लोगों के कान पका दिये और यह विश्वास जमा दिया कि प्रभुदयाल बिल्कुल बेधरम हो गये हैं। वे तो अब खान-पान, बरताव-व्यवहार मे मेहतरों के साथ हो गये है। विचित्र बात तो यह है कि विवेकहीन व्यक्तियों में सुन्दर विश्वासों की अपेक्षा ऐसे विश्वास जल्दी जम भी जाते हैं। घर वालों और जाति-बिरादरी वालों ने उनका विरोध ही नहीं किया बहिष्कृत कर जाति से बाहर कर दिया।

मास्टर प्रभुदयाल ने उस अन्याय और अवहेलना को पुरस्कार की तरह सिर-माथे लिया। किसी से न कुछ कहा और न अपवाद आरोप का प्रतिवाद किया। चुपचाप अपना बिस्तर लेकर पाठशाला में चले गये और वहीं हरिजन बस्ती रहने लगे। उन्होंने इसे सुविधा ही समझी और वे उसका उपयोग कर हरिजनों की एक रात्रि-गोष्ठी भी करने लगे। उन्हें कथा-वार्ता सुनाते, व्यसनों, बुराइयों और विकृतियों से विरत करते। स्वच्छता और सफाई से रहना सिखाते और सप्ताह-सप्ताह कीर्तन-भजन कराते। इसका परिणाम यह हुआ कि तेजी से हरिजनों का सुधार होन लगा। वे मनुष्य रूप में आने और मनुष्यता को पहचानने लगे।

हरिजन आन्दोलन के प्रमुख कार्य कर्त्ता श्री वियोगी हरि उन दिनों पन्ना राज्य में ही शिक्षा विभाग का उत्तरदायित्व सँभाले हुए थे। उन्होंने मास्टर प्रभुदयाल के काम देखे, भावना पहचानी और कष्टों का अनुभव किया। वे उनसे मिले और अपने घर ले जाने का आग्रह करने लगे। किन्तु मास्टर प्रभुदयाल इसके लिये राजी न हुए। उन्होंने उस स्थिति में अधिक सेवा कर सकने की सुविधा का अवसर अपने आराम के लिये नहीं छोड़ा। रूढ़िवादी प्रबन्धकों के स्कूल ने उन्हें अपने यहाँ से अलग तो कर ही दिया था तथापि उन्होंने श्री

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वियोगी हरि की सहायता से मिल सकने वाली नौकरी करना भी स्वीकार नहीं किया। हरिजन भाइयों ने उनके लिये कुछ करना चाहा, तो उन्होंने कह दिया कि जो कुछ कर सको तो स्कूल के लिये करो, मुझे कुछ नहीं चाहिये। मैंने जीविका के लिये दस-दस रुपये की दो ट्यूशनें करली हैं जो मेरे लिये पर्याप्त हैं।

त्याग और तपस्या की गति आज तक कौन रोक पाया। मास्टर प्रभुदयाल अखबारों, कार्यकर्त्ताओं, सम्बाददाताओं, जन वार्ताओं और श्री वियोगी हरि के पत्रों के माध्यम से नाम और काम रूप में महात्मा गाँधी और ठक्कर बापा के समीप दिल्ली जा पहुँचे। उनकी तड़ातड़ चिट्ठियाँ और सन्देश आने लगे कि मास्टर प्रभुदयाल दिल्ली चले आयें यहाँ पर बहुत काम है। किन्तु मास्टर प्रभुदयाल सन्तान की तरह प्रिय उस शिशु स्थापना को अनाथ छोड़कर दिल्ली जाने को तैयार न हुए। उन्होंने निवेदन भेज दिया कि जब तक यहाँ का हरिजन-बाल-विद्यालय प्रौढ़ नहीं हो जाता और मैं उसका भार उत्तरदायी व्यक्तियों के हाथ मे नहीं सौंप देता तब तक सेवा में दिल्ली नहीं आ सकता। यदि मैं इस स्थिति और अपरिपक्वावस्था में यहाँ से चला जाता हूँ तो इसका श्रेय विरोध को चला जायेगा जो समाज सेवी लोगों के लिये कुप्रभाव कारी होगा।

उस भयानक विरोध, बहिष्कार और अभाव के बीच भी मास्टर प्रभुदयाल किसी भी दृढ़ व्रती की तरह अपने कर्त्तव्य में तन, मन, धन, श्रम और समय के साथ लगे रहे। कई वर्षों तक लगे रहे। असत्य और असत् के पैर ही कितने होते हैं और कितनी होती है उसकी आयु? जल्दी ही तपस्या का तेज अपने अस्तित्व में आया और अकल्याणकारियों का उत्तेजित रक्त आप नीचे गिर गया। किन्तु होश आते ही उनका पाप शिर पर चढ़ दौरा और वे शरण के लिये इधर-उधर झाँकने लगे। ग्लानि और पाश्चात्ताप ने उनकी सहायता की जिससे सहयोग और सहायता के रूप में वे स्वयम् ही अपने किये का प्रतिकार करके प्रायश्चित करने में लग गये।

विरोध का वातावरण ध्वस्त हो गया। लोगों ने मास्टर प्रभुदयाल की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भावनाओं और सेवाओं का मूल्य आँका, उनकी गरिमा समझी और गुरुता को गौरव के साथ स्वीकार किया। पहले की तरह शिष्ट मण्डल फिर आने लगे, किन्तु अब उनमें पाठशाला बन्द करने का प्रस्ताव नहीं होता था बल्कि उसके विकास की योजना और परामर्श होता था, घर चलकर रहने का अनुरोध रहता था। मनस्वी मास्टर साहब ने शिष्ट मण्डलों के प्रस्तावों का पूर्व भाग तो सौभाग्य समझकर शिरोधार्य किया किन्तु उत्तर भाग के विषय में क्षमा माँग ली। उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि अब उन्होंने अपना सम्पूर्ण अस्तित्व जन-सेवा में समर्पित कर दिया है। अब उनका घर एक सीमित परिधि नहीं है और न कतिपय स्त्री-पुरुष उनका परिवार है तब तो समाज का पतित और उपेक्षित वर्ग उनका परिवार है और हर व्यक्ति उनका परिजन है जिसे उनकी सेवा की जरूरत है। मेरे जीवन की सारी सङ्कीर्णताएँ और सीमायें असीम मानवता में टूट कर मिल गई हैं। आप सबकी कृपा से मुझे सत्य और सौन्दर्य के दर्शन हो गये हैं, जिसके लिये मैं आपका कृतज्ञ हूँ।

सहनशीलता जब अपना पूर्ण प्रमाण दे देती है तब स्वभावतः जन सहयोग की अधिकारिणी बन जाती है। मास्टर प्रभुदयाल को अब सहयोग और सहायता की कमी नहीं रही। जल्दी-जल्दी उनकी पाठशाला ऊँची उठती और मजबूत होती गई। उसमें सभी प्रकार के साधन और उपकार पूरे हो गये। अच्छी खासी कक्षायें लगने लगीं। अवैतनिक पढ़ाने वाले भी मिल गये। उसकी एक समिति भी बन गई और भविष्य की सम्भावनाएँ भी स्पष्ट होने लगीं। मास्टर प्रभुदयाल दो हाथ से सैकड़ों हाथ वाले हो गये। निदान उन्होंने उत्तरदायी वर्तमान और भविष्य सौंपकर अपने को मुक्त किया और दिल्ली में बापू और बापा की महान छत्र छाया में जाकर विशाल जन सेवा के समुद्र में डूब जाने की योजना का विचार किया।

दिल्ली में एक से एक बढ़ कर देखने वाली चीजें थीं किन्तु मास्टर प्रभुदयाल कोई भी चीज तो नहीं देख पाये। देख भी कैसे पाते? वे दिल्ली की शोभा और शान देखने तो गये नहीं थे और न घूमने अथवा मनोरञ्जन करने। दिल्ली पहुँच कर वे बिना किसी विलम्ब के बापू और बापा से मिले और सीधे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उन बस्तियों की ओर चले गये जहाँ समाज के पिछड़े और उपेक्षित वर्ग के लोग नारकीय जीवन काटते हुए समाज के लिये लज्जा का कारण बने हुए थे ।

उन दिनों सांसी नाम की एक जाति रेगड़पुरा और करौलबाग में रह रही थी । इस जाति के लोग प्रमाणित जरायम पेशा और अपराधी माने जाते थे । सरकारी रजिस्टरों और पुलिस के लेखाओं में भी ये लोग जरायम पेशा दर्ज थे । इनको नित्य थाने में हाजिरी लिखानी होती थी । कहीं जाते थे तो थाने में रिपोर्ट देकर जाना पड़ता था, जहाँ जाते थे वहाँ के थाने में अपने आने की सूचना देनी पड़ती थी । इसके अतिरिक्त रोज रात को घरों पर इनकी पुकार होती थी । क्षेत्र में कोई भी जुर्म होने पर सब से पहले इन्हीं लोगों को पकड़ा जाता था । यह सांसी जाति पुलिस के कोप और अत्याचार की लक्ष्य बनी हुई थी ।

ऐसा होना कुछ अस्वाभाविक नहीं था । सांसी लोगों का आचरण उन दिनों बहुत गिरा हुआ था । इनके प्रधान कार्य थे चोरी करना, डाका डालना, भीख माँगना, राहजनी करना, जुआ खेलना, शराब बनाना, पीना और बेचना । कहीं-कहीं यह लोग वेश्यावृत्ति को भी प्रोत्साहन दिये हुए थे । बच्चों को चुराने और बेच देने की घटनायें भी इनमें पाई जाती थी । ब्याह के नाम पर लड़कियों को बेचने और दुष्ट स्त्रियों का व्यवसाय कर लेने में भी ये लोग सङ्कोच नहीं करते थे । अँधेरे-उजेले में मिल जाने वाली अनाज की गाड़ियों को लूट लेना इनके लिये साधारण बात थी । जेल को अपना घर मानने वाले यह लोग उस नवयुवक को बहुत महत्त्व देते थे जो अधिक से अधिक जेल काटे हुए होता था । इन सब कुकृत्यों और विकृत संस्कारों के कारण इस जाति को घोषित जरायम पेशा अथवा अपराधी जाति माना जाता था । समाज इनकी ओर घृणा से तो देखता था किन्तु इनके सुधार की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता था । जो कुछ जिस प्रकार चला आ रहा था, उसी प्रकार चला जा रहा था ।

मास्टर प्रभुदयाल ने इन लोगों की ओर दया और सहानुभूति से देखा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और अपनी सेवाओं का सच्चा अधिकारी माना। उन्होंने उन कुसंस्कारी लोगों के सुधार में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा देने का सङ्कल्प करके बापू से उनकी सेवा का अधिकार माँग लिया। मास्टर प्रभुदयाल के पास इस समय जीविका का कोई साधन नहीं था। उन्होंने किन्हीं बच्चों की दो ट्यूशन कर लेने का विचार वहाँ भी बनाया। किन्तु केवल दो घण्टे की ट्यूशन से दिल्ली जैसे मँहगे नगर में काम चलना सम्भव न था। इससे अधिक समय मास्टर प्रभुदयाल दे सकने में असमर्थ थे। उनके जीवन का मुख्य लक्ष्य पेट पालन नहीं, बल्कि सांसी लोगों की सुधार-सेवा था। हरिजन-सेवक-सभाज ने उनकी इस आवश्यकता और कठिनाई को समझा। हल के रूप में मास्टर साहब के अनुरोध-पूर्वक गुजारे लायक वृत्ति की व्यवस्था कर दी।

सांसियों के अवस्था सुधार के उपायों में मास्टर प्रभुदयाल को तीन उपाय समझ में आये। एक शिक्षा, दूसरा निर्व्यसनता और तीसरा रोजगार। सारे सुधारों का मूल आधार शिक्षा तो है ही। व्यसन-त्याग और रोजगार भी कुछ कम महत्त्वपूर्ण उपाय नहीं हैं। शराब आदि नशे जहाँ स्वास्थ्य और धन का नाश करते हैं वहाँ बुद्धि भी भ्रष्ट कर देते हैं। जुआ तो दरिद्रता का बहुत बड़ा हेतु है। एक ओर बुद्धि भ्रष्ट होने और दूसरी ओर निर्धनता आने से सांसी लोग अपराध के मार्ग पर चल कर चोरी, डकैती और अन्य प्रकार के अनैतिक काम करने लगते थे। एक ओर तो इनके व्यसन छूटें और दूसरी ओर शिक्षा और रोजगार बढ़े तो जल्दी ही उनका सुधार होने लगे। मास्टर प्रभुदयाल ने विचार किया और अपने कार्य में लग गये।

सांसी लोग प्रायः नित्य ही शराब पीते और बकते थे। उन्होंने उनके शराब पीने के समय-सन्ध्या को उनकी बस्ती में जाना और समझाना शुरू किया। कुछ दिन तो सांसी लोग उनकी बात सुनते और अपना काम करते रहे। किन्तु जब उन्हें रोज-रोज आते और शराब की बुराई करते और छोड़ देने की शिक्षा देते देखा, तो उन्होंने उनको अपनी मौज में बाधक समझना शुरू कर दिया। पहले तो उन्होंने अपने उन हितैषी को भला-बुरा कहा—किन्तु जब वे तब भी जाते और समझाते रहे तो कई बार अनेक उद्दंड सांसियों ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उन्हें नशे में बुरी तरह मारा-पीटा भी । किन्तु तब भी उन्होंने जाना और समझाना नहीं छोड़ा ।

कई बार ज्यादा चोटें लग जाने पर मास्टर प्रभुदयाल के मित्रों ने उनसे कहा कि जब कोई बुरे आदमी अच्छी बात से इतने चिढ़ते हैं तो आपको क्या गरज पड़ी है जो उन्हें जाकर समझाते और मार खाते हैं । जो अपना सुधार खुद नहीं चाहता उसका सुधार आप कर भी कैसे सकते हैं ? मास्टर प्रभुदयाल दे उत्तर दिया—"यदि उनमें भला-बुरा समझने की बुद्धि हो तो ऐसा क्यों करें ? यह बुद्धि तो उन्हें बार-बार समझाने से ही आयेगी । कोई अपना सुधार खुद करना कहाँ चाहता है, सुधार के लिये तो उसे प्रेरणा दी जाती है । वही मैं कर रहा हूँ । शराब पीकर नशे में होने के समय जाने के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि उस वक्त जाने पर वे हम पर नाराज जरूर होते हैं लेकिन मैं उस समय जाता इसलिये हूँ कि नशा उतरने के बाद वे मेरे साथ किये अपने व्यवहार को देखकर यह समझ सकें कि शराब कितनी बुरी चीज होती है ।

मास्टर प्रभुदयाल इसी आशा पर आते और उन्हें शराब छोड़ देने के लिये समझाते रहे । आखिर एक दिन सांसियों ने तङ्ग आकर उनसे निजात पाने के लिये उन्हें पीट कर एक अँधे कुए में डाल दिया । मास्टर प्रभुदयाल बेचारे पूरी रात और दूसरे दिन दोपहर तक उस कुए में पड़े रहे । अन्त में जब दूसरे दिन सांसियों का नशा उतरा और उन्हें अपने किये की धुँधली-सी याद आई तो दौड़े-दौड़े कुए पर गये और देखा कि मास्टर प्रभुदयाल उसमें चुपचाप पड़े हुए कुछ सोच रहे हैं । सांसियों ने उन्हें बाहर निकाला और बड़ी माफी माँगी । मास्टर प्रभुदयाल ने उनसे बड़े प्यार के साथ कहा कि भइया इसमें तुम्हारी गलती ही क्या है ? यह तो शराब की खता थी जिसके प्रभाव से आप लोगों ने मुझे कुँए में डाल दिया । इसीलिये तो आप सब के हित के लिये कहता हूँ कि शराब बहुत बुरी चीज है उसे छोड़ दो । आप लोग उसी के प्रभाव से अपराध कर बैठते हैं और पुलिस द्वारा तरह-तरह से अपमानित और तङ्ग-तराश किए जाते हैं । मैं आपको यों ही जीवर भर समझाता रहूँगा । फिर चाहे आप लोग मुझे मार ही क्यों न डालें ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मास्टर प्रभुदयाल की सहिष्णुता, सद्भावना और भलमनसाहत जादू की तरह काम कर गई ! सांसियों को अपने किये पर घोर ग्लानि हुई। उन्होंने अपने को धिक्कारा और मास्टर साहब को वचन दिया कि भविष्य में वे सब शराब छोड़ देने का प्रयत्न करेंगे। सभी ने अपनी पञ्चायत की और शराब छोड़ने की सामूहिक प्रतिज्ञा की, जिसको उन्होंने सन्तोषजनक सीमा तक निबाहा ! सांसियों का एक व्यसन छूट गया।

शराब पीने में रुचि न रहने से शराब बनाने का प्रश्न ही नहीं उठता। इतना ही क्यों उनके बहुत से आपसी झगड़े भी बन्द हो गये और सांसियों ने जीवन में पहली बार एक अच्छाई की शीतलता अनुभव की। उनके जीवन में मोड़ आने लगा।

शराब तो छूटी, लेकिन जुआ अभी चल रहा था। मास्टर प्रभुदयाल अब उसे छुड़ाने के प्रयत्न में लग गये। वे निःसङ्कोच जुआरियों के बीच चले जाते और हाथ जोड़कर बड़ी करुणा के साथ कहते—"भाइयो ! आप लोग अपने साथ, अपनी बीबी और अपने बच्चों के साथ यह क्या अनर्थ कर रहे हैं ? जुआ सारी दुर्दशाओं की जड़ हैं। यह बुराई तो बड़े धनवानों को मिट्टी में मिलाकर भीख मँगा देती है। इसकी हार और जीत दोनों विनाशकारी होती हैं।"

"राजा नल को इसी जुए के कारण अपना राज्य खोकर दर-दर की ठोकरें खानी पड़ी। भूखे-प्यासे और नंगे-उघारे रहकर जङ्गलों पहाड़ों में भटकना पड़ा। अपनी प्राण प्यारी रानी दमयन्ती को जङ्गल में सोते छोड़ कर भागना पड़ा। चक्रवर्ती राजा होकर दूसरे के घोड़े पालने की नौकरी करके सईस बनना पड़ा। उनकी महारानी को वन-वन अकेला भटकना और तरह-तरह के त्रास सहने पड़े। बिना बुलाये पिता के घर जाकर दुःख के दिन काटने पड़े।"

इसी दुष्ट बुराई के कारण धर्मराज कहे जाने वाले महाराज युधिष्ठिर को अपने चरित्र पर कलङ्क लेना पड़ा। इसे जुए के कारण ऐसा कौन-सा अपमान और कष्ट था था जो उन्हें उठाना पड़ा। राज्य गँवाया अपने साथ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपने चारों भाइयों को दास बनाया। अपनी पटरानी द्रौपदी को हार कर उसका सरी सभा में अपमान कराया। तेरह वर्ष का बनवास काटना और भीख माँग कर गुजारा करना पड़ा। महाराज विराट के यहाँ द्रौपदी के पाँचों पाण्डवों को नौकरी करके नीच टहल करनी पड़ी। ऐसी कौन-सी यातना थी जो जुए के कारण अपने परिवार के साथ महाराज युधिष्ठिर को नहीं उठानी पड़ी। इतना ही क्यों उनके इस व्यसन के कारण पूरे देश का ही ध्वंस हो गया। महाभारत के युद्ध के कारणों में यह जुआ ही मूल कारण था। जिसके कारण देश के सारे योद्धा मारे गये, कला-कौशल और वैज्ञानिक उन्नति का विनाश हो गया। देश पतन के गर्त में ऐसा गिरा कि पाँच हजार साल बाद आज भी अच्छी तरह नहीं खड़ा हो सका। जुआ सारे अनर्थों की जड़ है। भाइयो ! मेरी प्रार्थना है कि इस बुराई को भी छोड़ दो।

इन बातों के साथ-साथ मास्टर प्रभुदयाल उन्हें उनके बीबी-बच्चों को दिखलाते और कहते—"देखो आपकी ये स्त्रियाँ और प्यारे बच्चे अधनंगे और चीथड़े पहने फिरते हैं। इन्हें भर पेट भोजन नहीं मिलता। क्या इन्हें भूख नहीं लगती या इन गरीबों को कपड़ों की जरूरत नहीं होती ? होती है। लेकिन आप दे नहीं पाते। जानते हैं क्यों ? इसी जुए के कारण। आप लोग अपनी कमाई तो इस बुराई में स्वाहा कर देते हैं। तब भला इनके लिये रोटी, कपड़ा कहाँ से जुटा पायें। अपने इन बच्चों और अपनी इन स्त्रियों पर दया खाकर भगवान् के लिए जुआ छोड़ दो। उससे बचा पैसा इनकी उन्नति, सुधार और शिक्षा पर लगाइये जिससे यह सब भी समाज में इन्सानों की तरह से रह सकें।"

मास्टर प्रभुदयाल के सच्चे हृदय से निकले हुए ये उद्‌गार साँसी लोगों पर प्रभाव डाले बिना न रहते थे। उन्होंने धीरे-धीरे जुए की आदत छोड़ना शुरू कर दी। किन्तु तब भी कभी-कभी उनकी महफिल जम ही जाती थी और जब-तब फड़ कौड़ियों और पैसों से आबाद ही हो जाती थी। मास्टर प्रभुदयाल ने इसका कारण और उपाय दोनों सोच निकाले। उन्होंने समझ लिया कि अभ्यास वश समय होने पर इनको और कोई काम न होने से जुए की तलब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सताने लगती है। और यह चार-छः इकट्ठे होकर उसमें जुट जाते हैं। यदि इन्हें उस अवसर पर किसी काम में लगाया जा सके तो अवश्य ही ये इस कुकृत्य से बच जायें। अस्तु उन्होंने सायंकाल सबको इकट्ठा करके कथा-वार्ता और भजन-कीर्तन का कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिया। धीरे-धीरे सबको उसमें रस आने लगा और जुए की हाजत दूर जाने लगी। सांसी लोगों में यह एक दूसरा सुन्दर सुधार था।

चोरी, डकैती, राहजनी और वेश्यावृत्ति का सुधार तो जीविका के भले साधनों के आधार पर सम्भव था। यह एक कठिन समस्या थी। एक तो बे-रोजगारी का बोलबाला था दूसरे सांसी लोग चोरी आदि के लिए बदनाम थे, कोई उन पर विश्वास करने को तैयार नहीं था। फिर भी मास्टर प्रभुदयाल ने न आशा छोड़ी, न हिम्मत हारी और प्रयत्नों से विरत हुए। उन्होंने दिल्ली नगर के कोने, मोहल्ले और गलियों की खाक छान कर मजदूरी खोजनी और उस पर उन्हें लगाना शुरू कर दिया। पहले तो उन्होंने सांसियों को श्रम की महत्ता और ईमान की कमाई का गौरव समझाया और फिर किसी को ले जाकर ईंट गारे के काम पर लगाया, किसी को ले जाकर पल्लेदारी और कुली के काम पर कर दिया, बहुतों को रेलवे बारहमासी और मौसमी काम पर नियुक्त कराया। बहुतो को रिक्शा, ताँगों का काम दिलाया। सारांश यह कि वे दिन भर सारे शहर में घूमते और सांसी लोगों के लिए मेहनत-मजदूरी का काम खोजते रहते थे। जहाँ भी उन्हें जो काम मिलता था उन्हें ले जाकर लगा दिया करते थे। इसके लिए उन्हें जहाँ विश्वास दिलाना पड़ता था दिलाते थे, जहाँ जमानत देनी पड़ती थी देते थे। इसके साथ ही वे मिलों, कारखानों और फर्मों के मालिक मैनेजरों से भी मिले और उनसे निवेदन किया कि वे समाज, राष्ट्र और मानवता के नाते सांसी लोगों को अपने प्रतिष्ठानों में काम देते और इस प्रकार सुधार कार्य में उनका हाथ बटाते रहें। इधर सांसी लोगों से कहते थे कि भाइयो ! मैं अपने विश्वास और जमानत पर आप लोगों को काम दिखलाता हूँ अब मेरी लाज आप के ही हाथ में है। सांसी लोग यथासम्भव अपने हितैषी के विश्वास की रक्षा करते थे और यदि संस्कारवश किसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

से कोई भूल हो जाती थी तो मास्टर साहब उसे तिरस्कृत नहीं करते थे। उसे समझाते थे और फिर विश्वास दिला कर काम पर लगाते थे। उनके इन प्रयत्नों और सद्भावनाओं का गहरा असर पड़ा और सांसी लोग अनैतिक आजीविका से विरत हो होकर मेहनत-मजदूरी की ओर जाने लगे।

इन कामों के अतिरिक्त उन्होंने बहुत से सांसी पुरुषों और खास तौर ये स्त्रियों को फूलों, फलों, कन्दों, जड़ी-बूटियों, घासों,लकड़ियों, सीपी, मूँगे और कौड़ियों की खोज-बीन के साथ-साथ चटाइयों, चिकों, झाबों, टोकरियों और साधारण खिलौनों का काम भी सिखाया। दौड़-धूप कर धनवानों और संस्थाओं से धन की सहायता भी कराई, बाजार मे उनके माल के लिये खुद बैठ-बैठ कर खपत की व्यवस्था बनाई। इस प्रकार सांसी लोगों की अपराधवृत्ति छूटने और उनकी आर्थिक उन्नति होने लगी।

सांसी लोग अब अपराधी नहीं रहे थे। मजदूर और शिल्पी बनने लगे थे। तब थाने में हाजिरी, रात में पुकार और पुलिस की बहियों में जरायम पेशा लिखे रहने की क्या जरूरत थी? मास्टर प्रभूदयाल भला अब इस अन्याय को कैसे सहन कर सकते थे। उनके प्रयत्न इस दिशा में भी चल पड़े। वे स्थानीय पुलिस और पुलिस अधिकारियों से मिले। उन्हें वस्तुस्थिति से अवगत कराया ओर जयराम पेशा की सूची से उनका नाम काट देने के लिए प्रार्थनायें की। महीनों और वर्षों वे इस प्रयत्न में लगे रहे किन्तु राज-काज तो राज-काज ही होते हैं। कुछ सुनवाई हुई. कुछ नहीं हुई। मास्टर प्रभुदयाल ने इस सुधार के लिए आन्दोलन चलाये, सत्याग्रह किये, अनशन और शपथनाम का आधार लिया। वे अधिकारियों से दौरे के समय मिले उन्हें उनकी प्रगति से अवगत कराया। समाजसेवियों, सम्भ्रान्त नागरिकों और जन नेताओं का सहारा लिया। जमानतें दीं और सांसियों की नेक चलनी के वायदे किये और तब वे अपने उद्देश्य में सफल होकर अधिकारियों को सुधार की ओर मोड़ सके।

इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने तन, मन और प्राणों की बाजी लगाकर सांसियों पर होने वाले पुलिस के अन्याय और अत्याचार से टक्कर ली।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चालान शुदा सांसियों की अपनी देख-रेख में जाँच कराई और जो निरपराध निकले पुलिस से उनकी रक्षा की। सांसियों पर चलने वाले मुकदमे में स्वयम् गये और नीर-क्षीर विवेचन में निष्पक्ष होकर अदालतों और अधिकारियों की सहायता की। यद्यपि अपने इस काम के लिए मास्टर प्रभुदयाल को पुलिस का कोप भाजन बनना पड़ा, यातनायें भी सहनी पड़ीं। किन्तु वे सबसे निरपेक्ष रहकर अपने प्रयत्न में लगे रहे और तब ही माने जब उनकी आम गिरफ्तारी का रवैया बन्द करा दिया।

इतना काम कर चुकने के बाद मास्टर प्रभुदयाल सांसी लोगों के ऊँचे और स्थायी सुधार की ओर झुके। अब उन्होने उन्हें सफाई का महत्त्व और गन्दगी की हानियाँ समझानी शुरू कीं। उन्होंने बतलाया—"गन्दा रहना मनुष्य के लिए बड़े शर्म की बात है। यह दुर्गुण तो जानवरों की विशेषता है मनुष्य की नहीं गन्दे रहने वाले लोगों से भगवान् नाराज हो जाते हैं। क्यों कि गन्दगी एक पाप है। मनुष्य को इस पाप में बचकर रहना चाहिये। इतना ही नहीं, गन्दगी से हैजा, प्लेग मलेरिया आदि बड़ी-बड़ी बीमारियाँ और महामारियाँ फैलती हैं। गन्दे रहने वाले लोगों के शरीर और कपड़ों से बदबू निकलती है। लोग उन्हें अपने पास बिठालने में घृणा करते हैं। गन्दे लोगों के शरीर में जूँए, लीख आदि कीटाणु पैदा हो जाते हैं। वे खुजली, दाद आदि बड़ी कष्ट दायक और न जाने वाली बीमारियों से घिरे रहते हैं। बीमारी पैदा करने वाले जितने भी कारण होते हैं गन्दगी उनमें प्रमुख है। जहाँ गन्दगी रहती है वहाँ मक्खी, मच्छर, पिस्सू, खटमल आदि कष्ट देने और आरोग्य नष्ट करने वाले कीड़े पैदा हो जाते हैं गन्दे आदमी से सभी लोग घृणा करते हैं। समाज में वह नीची नजर से देखा जाता है। इसलिये मनुष्य को गन्दा नहीं रहना चाहिये।'

इसके विपरीत सफाई एक दैवी गुण माना गया है जो मनुष्य स्वच्छ रहता है देवता उससे प्रसन्न रहते हैं। स्वच्छता मनुष्यता का प्रमुख लक्षण है। इसी में मनुष्यता का गौरव भी है। जहाँ सफाई रहती है वहाँ देवता विहार करते हैं—ऐसा शास्त्रों में बतलाया गया है। स्वच्छता और सफाई के लिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जितना श्रम करना पड़े, कष्ट उठाना पड़े उसे परम कर्तव्य मान कर उठाना चाहिये। मनुष्य के गुणों में स्वच्छता सबसे महान् और महत्वपूर्ण गुण है। सफाई से स्वास्थ्य ठीक रहता है। रुचि का परिमार्जन होता है और समाज में सम्मान बढ़ता है। इसलिए सभी लोगों को शरीर, कपड़ों, घरों और बस्तियों को साफ रहने का प्रयत्न करना चाहिए।"

इन शिक्षाओं के साथ मास्टर प्रभुदयाल घर-घर जाकर सांसी लोगों को सफाई की प्रेरणा देते और खुद भी उनका हाथ बटाते थे। उन्होंने स्त्री-और पुरुषों के सफाई-दलों का गठन कराया और सप्ताह बाद घरों और बस्ती की सफाई के कार्य-क्रम चलाए। वे लोगों को जल विहार के नाम पर नदी, तालाबों पर ले जाते थे और सबको अपने साथ लेकर नहाते और कपड़े धोते थे। उन्होंने खुद लग कर उनको कुओं और नलों पर सफाई रखने का ढङ्ग सिखलाया। जिसका परिणाम यह हुआ कि लोग अपेक्षाकृत स्वच्छ रहकर भद्रता की ओर बढ़ने लगे।

अन्ध-विश्वास और पशु-बलि की प्रथा सांसी लोगो के सुधार में एक बड़ी समस्या थी। इन दोनों विकृतियों के साथ धर्म का नाम जुड़ा होने से परिवर्तन बड़ा कठिन दीखता था। किन्तु मास्टर प्रभुदयाल ने इस दिशा में भी सुधार कर दिखाये। उन्होंने न जाने कितनी बार पशु-बलि के समय स्थलों पर जाकर यह बतलाया कि देवता तो कल्याण कारी वर्ग माना गया है। उसके नाम पर जो कोई प्राणियों की हत्या करता है वे उससे अप्रसन्न हो जाते हैं। देवता तो करुणा, दया और ममता के प्रतिरूप होते हैं। वे इस प्रकार निरीह प्राणियों का वध सहन नहीं कर सकते। जो लोग यह मानते हैं कि रक्त, मांस आदि का भोग लगाने से देवता प्रसन्न होते हैं वह भारी भ्रम है। देवता तो सद् विचारों, सत्कर्मों और जीव मात्र पर दया करने वालों से प्रसन्न होते हैं।

इसके अतिरिक्त उन्होंने जीव वध के स्थल पर उपस्थित विभीषिका की ओर ध्यान आकर्षित कर लोगों में उस रक्तपात के प्रति घृणा उत्पन्न की। इतना ही नहीं जहाँ-जहाँ उन्हें उस जघन्यता को रोकने के लिए सत्याग्रह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करना पड़ा, उन्होंने किया। अनशन, व्रत और उपवास के कार्यक्रम चलाये। यातना, तिरस्कार और अवहेलना सही पर सांसी लोगों का विश्वास पशु-बलि की ओर से शिथिल ही कर दिया।

अन्धि-वश्वासों औद भूतों-प्रेतों का भय दूर करने के लिए उन्होंने सांसी लोगों को धर्म का स्वरूप समझाया। नीति, धर्म और पुराणों की कथाएँ भी सुनाईं। उनसे होने वाली हानियों से अवगत कराया और न जाने कितनी घटनाएँ सुनाकर उनका इस दिशा में भी सुधार किया।

इतना सब कुछ कर लेने पर भी मास्टर प्रभुदयाल ने सन्तोष नहीं किया। वे इस बात से अनभिज्ञ नहीं थे कि सांसी लोगों में जब तक शिक्षा का प्रसार नहीं होगा तब तक उनका यथार्थ सुधार नहीं हो सकता और जिन सुधारों का श्री गणेश उनमें हुआ भी है वह अविद्या के प्रकोप से जल्दी ही समाप्त हो जायेगा। अस्तु उन्होंने सांसियों के बीच शिक्षा प्रसार की नीव रक्खी। समय परिस्थितियों और साधनों के अभाव में उन्होंने प्रौढ़ शिक्षा की योजना तो स्थगित रक्खी किन्तु बच्चों की एक पाठशाला प्रारम्भ कर दी। यद्यपि इस बार उन्हें पन्ना की अछूत पाठशाला के समान विरोध और कठिनाइयों का सामना तो नहीं करना पड़ा। तथापि परिश्रम ने उनकी एड़ी-चोटी का पसीना एक कर दिया। उन्होंने अपने पूर्व अनुभवों से पूरा लाभ उठाया। सांसी बाल पाठशाला में उन्होंने पहले से ही नगर के समाज सेवी व्यक्तियों और संस्थाओं को शामिल कर लिया था। यद्यपि इन स्रोतों ने सहायता और सहयोग में कृपणता नहीं की तथापि वे कुछ सक्रियता में भागीदार न हो सके। मास्टर प्रभुदयाल ने इसकी जरा भी परवाह न की और अन्य सारे काम करते हुए बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया। उनके इन सब कामों को बापू और बापा की प्रशंसा तो मिलती ही रहती थी। इसलिये मास्टर साहब की सेवाओं का महत्त्व बढ़ते देर न लगी। कुछ ही समय में उन्हें सहायक सेवकों और अवैतनिक अध्यापकों की सुविधा हो गई। बच्चों की पाठशाला तेजी के साथ सुचारु रूप से चलने लगी।

अब मास्टर साहब ने देखा कि सांसी लोग रेगड़र, करौलबाग आदि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्षेत्रों में रहते हैं वे उपयुक्त नहीं हैं। उन्हें उन लोगों को ऐसे स्थानों पर बसाने की चिंता हुई जहाँ पर उस वर्ग को अधिक सुविधा हो सके और दिल्ली के नागरिकों से उनका सम्पर्क हो सके। इसके बिना साँसियों में, जो कि युग-युग से बिछड़े चले आ रहे थे, सामाजिक एवम् नागरिक चेतना का जागरण सम्भव नहीं था।

निदान मास्टर प्रभुदयाल ने सांसी लोगों के उपयुक्त निवास स्थान की खोज में पुनः दिल्ली की धूल छानना शुरू कर दिया। बड़ी खोज-बीन और देख-भाल के बाद उन्होंने अन्धा मुगल सब्जी मण्डी और रेलवे स्टेशन के पास उनके रहने का स्थान चुना। किन्तु उन्हें उसके पुराने स्थान से विस्थापित कर नये स्थानों पर बसाना कोई हँसी खेल नहीं था। केवल किसी प्लाट का प्रबन्ध हो जाने भर मे ही तो बस्ती नहीं बस जाती। उसके लिये तो घर और कोटर भी तो चाहिये। लेकिन मास्टर प्रभुदयाल को तो यह सब करना ही था। उन्होंने फिर कमर कसी और शासन प्रसासन तथा अधिकारियों के पास दौड़ लगानी शुरू कर दी। न जाने कितनी दौड़-धूप और परिश्रम प्रयत्न के बाद वे साँसी बस्ती के लिये चुने हुए स्थान मञ्जूर करा पाये। किन्तु यह तो समस्या का आधा समाधान ही था घर और कोटरों की आधी समस्या तो अभी शेष ही थी। इसके समाधान के लिये वे नगर के धनवानों और उदार व्यक्तियों से मिले। उन्हें परोपकार के लिए प्रेरित किया। पैसा, वस्तु, लकड़ी, ईंट, घास, फूँस, बाँस-बल्ली आदि जो कुछ भी जिससे मिल सका मास्टर साहब ढो-ढोकर स्थलों पर जमा करते गये। जब देखा कि अब कि अब काम प्रारम्भ करने भर की सामग्री हो गई है तब उन्होंने सांसी लोगों से ने नौजवानों को छाँट-छाँट कर एक श्रमिक दल तैय्यार किया और बस्तियों के निर्माण का कार्य प्रारम्भ कर दिया। दीवारें उठने लगीं, सांसियों के परिवार आ-आकर उनमें बसने लगे। मास्टर प्रभुदयाल अपनी पाठशाला भी उठा लाये उसे तीन शाखाओं में विभक्त कर तीनों बस्तियों में स्थापित कर दी। देखते ही देखते 'प्रताप नगर' नाम से सांसियों की नई बस्ती बस गई और सब काम व्यवस्थित रूप से चलने लगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

[illegible]र व्यक्ति मास्टर प्रभुदयाल सांसियों की तरह देश में कञ्जड़, कोल, किरात, भील आदि अनेक जातियाँ ऐसी हैं जो अनेक दुर्व्यसनों में ग्रस्त हैं। अपने दुष्कर्मों का फल अकेले ही नहीं भोगना पड़ता। सारा समाज उनकी उपजायी यन्त्रणाओं की लपेट में आ जाता है। सामाजिक जीवन में पाप और प्रतिशोध का पूर्णमय इसी तरह होता है।

शराबी, जुआरी, काम-धन्धा कर नहीं सकते, पेट पालने और कर्ज चुकाने के लिये धन तो चाहिये। इसलिए चोरी करते हैं। चोरी में धन किसी और का जाता है और फिर उसे मुकदमा लड़ना पड़ता है। चार और झूँठी साँची ढूढ़नी पड़ती हैं उनका फिर गिरोह बनता और सामूहिक झगड़े बढ़ते हैं इस तरह सारा समाज बुराइयों में डूबता चला जाता है। आज भारतीय समाज की दशा कुछ ऐसी ही निश्चृङ्खलित हो रही है।

समाज विग्रह के कारण उन्नति की परिस्थितियाँ होते हुए भी लोगों के शारीरिक, बौद्धिक एवम् आत्मिक क्षेत्र गन्दे-गलीज, दुर्भावनायुक्त, अशिक्षित, अन्ध-विश्वास ग्रस्त पड़े हैं। यह बात एक जाति, गाँव, प्रदेश, तक ही सीमित नहीं बुराइयों और अनैतिकता का जोर आज चहुँ ओर बरसाती बादलों की तरह सघन हो उठा है।

उसको मिटाने और भारतीय समाज तथा जन-जीवन को स्वच्छ-जीवन जीने का प्रकाश देने के लिए आज किन्हीं बड़े प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तियों की आवश्यकता उतनी नहीं है जितनी मास्टर प्रभुदयाल जैसे छोटे-छोटे भावनाशील कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है। जो घृणित समाज के बीच बैठकर उसी तरह उनका स्वच्छ मार्ग-दर्शन करें, जिस तरह माँ अपने उद्दण्ड और अपराधी बालक को भी प्यार करती और सेवा कर्त्तव्य निबाहती रहती है। भाषण और प्रवचन देने से जो काम नहीं बनता वह हृदय की मिठास और अपनत्व देकर किया जा सकता है। इसके लिए हर कार्यकर्त्ता को छोटा बनना पड़ता है। सेवा का श्रेय तभी तो मिल सकता हैं।

ढूँढ़ी जाये तो हर व्यक्ति में कुछ न कुछ ऐसी योग्यता होती है जिसको

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समाज के अन्य लोगों को आवश्यकता होती है । हर व्यक्ति का छोटा-सा प्रभाव क्षेत्र भी होता है । उतने क्षेत्र को विकसित करने, शिक्षित करने, संस्कारवान बनाने, स्वस्थ बनाने, निर्धनों को औद्योगिक दिशा प्रदान करने की विचार सेवा हर थोड़ा-सा भी शिक्षित किन्तु भावनाशील व्यक्ति कर सकता है । मास्टर प्रभुदयाल का नाम शायद देश की ५ प्रतिशत जनता भी न जानती होगी पर उन्होंने जो कार्य सम्पन्न किया वह सैकड़ों, हजारों को प्रेरणा और मार्ग-दर्शन देने वाला है ।

एक बार मास्टर साहब के एक मित्र ने पूछा 'आपने सांसियों के उत्थान के लिए इतना परिश्रम किया । अपमान और अभाव भी सहे । आजकल तो नेता लोग सेवा से पूर्व साधन ढूँढ़ते हैं और अपनी स्थिति मजबूत बनाने का प्रयत्न करते हैं । तुम्हें इन सेवाओं के बदले क्या मिला ?" तो उन्होंने हँस करके उत्तर दिया । ,,भाई सेवा का प्रतिफल आत्मिक शान्ति है सच्चे हृदय से की गई समाज-सेवा से मिलने वाली आत्म-शान्ति की तुलना धन, वैभव से नहीं की जा सकती । साँसियों के बच्चे पढ़-लिखकर जब योग्य नागरिक निकलेंगे तो उनकी प्रसन्नताओं का आशीर्वाद क्या कोई पैसा से खरीद सकेगा ? उनकी स्त्रियों को हर्ष-उल्लास के साथ घर का काम करते देख कर जो आनन्द मिलेगा क्या उसे किसी कारखाने में पाया जा सकेगा ? यह सब हमारे अपने भाई, अपने परिजन और देशवासी हैं उनकी सेवा करना मेरा कर्त्तव्य था । कर्त्तव्य के लिए उपहार की क्या आवश्यकता ? मुझे जो सुख और शान्ति मिल रही है वह किसी भी लौकिक उपलब्ध से बढ़कर है ।"

उन्हें कई बार हल्का-हल्का उदर शूल हो जाता था । किन्तु इन दिनों जब वे सांसियों के लिए कुछ काम कर रहे थे तब यह शूल कई बार इतना बढ़ जाता था कि उनकी आँखों में आँसू भर आते । कहने वाले कहते यदि सेवा का यही फल है तो फिर संसार में यह व्रत कौन करेगा ? पर प्रभु-दयाल हँसकर कहते—

जीव किये गये कर्मों के फल से वंचित नहीं हो सकता ? प्रारब्ध भोग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तो भोगने ही पड़ते हैं चाहे कोई सेवा क्या ईश्वर उपासना में ही क्यों न संलग्न रहता हो ? प्रारब्ध कर्मों का भोग भोगते हुए भी जो लोग सेवा, सहिष्णुता, कर्त्तव्य-पालन, उपासना आदि का नियम निबाहते हैं। उनका भावी-जीवन समुन्नत, सुखी शान्त एवम् संस्कारवान् ही बनता है इस तरह सेवा-कर्तव्य के माध्यम से मनुष्य सामाजिक सम्मान ही नहीं पाता अपने मनुष्य शरीर में आने का लक्ष्य भी पूरा करता है। मैं यह अनुभव करता हूँ कि मुझे इस संसार में एक नियामक शक्ति की अनुभूति करने का अवसर मिला है पर उसके लिए मैंने यदि कोई साधना की तो वह दीन-दुखियों की सेवा और उनके प्रति प्रेम और आत्मीयता भाव ही रहा है।

किन्तु खेद ! बस्ती के निर्माता और सांसियों के उद्धार कर्ता मास्टर प्रभुदयाल का स्वास्थ्य अब बिल्कुल जबाव दे गया था। वे बीमार और बहुत बीमार पड़ गए। लोगों ने उन्हें दिल्ली के बिलेंग्डन अस्पताल में भरती करा दिया। परीक्षण के बाद डाक्टरों ने बताया कि उनके पेट में एक भयानक फोड़ा बन गया है जिसके कारण उनका अगाध परिश्रम और भोजन आदि के विषय में लापरवाही हो रही है। अब जब मास्टर प्रभुदयाल के कर्त्तव्यों की इति श्री हो गई तब उन्होंने एक दिन बतलाया कि यह फोड़ा उन्हें कई वर्षों से तकलीफ दे रहा था। पर उन्होंने इसकी चर्चा इसलिए नहीं की थी कि लोग उन्हें काम करने से रोकते जो कि उनके लिए मृत्यु से भी अधिक कष्ट-दायक होता। लोगों ने देखा कि मास्टर साहब के तलवों की सारी खाल उड़ गई थी और उसके स्थान पर बड़े-बड़े गड्ढे पड़ गये थे बड़ी कठिनाई से कारण का पता चला कि उन्होंने दिल्ली आकर जब सांसी लोगों को दशा और उन पर पुलिस का अत्याचार देखा तो इन्होंने यह प्रतिज्ञा की थी कि जब तक जरामय पेशा कानून (टी० सी० एक्ट) रद्द नहीं करा देंगे और सांसी वर्ग को जीवन की विभीषिका से निकाल कर सभ्यता की दिशा में नहीं चला देंगे तब तक जूता, चप्पल आदि कुछ भी नहीं पहनूँगा। अपनी इसी प्रतिज्ञा-पालन में वे पूरे समय नङ्गे पाँव ही दौड़ते रहे जिससे उनकी यह दशा हो गई थी। मास्टर प्रभुदयाल के पाँवों की दशा कुछ भी हो गई है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किन्तु किये गए सत्कर्मों के लिए वे पाँच महात्माओं की तरह से पूज्य अवश्य हो गये ।

अन्त में जब उन्होंने इस संसार से विदा लेकर सदा के लिए अपनी आँखें बन्द कीं तब वे अपने प्यारे सांसियों के लिए अठहत्तर मकान और न जाने कितनी झुग्गियाँ देख चुके थे । उनके बाद तो आदिवासियों के सुधार का आन्दोलन ही चल पड़ा जो इस समय प्रायः पूरे भारत में चल रहा है और शायद तब तक चलता भी रहेगा जब तक उनका उद्धार न हो जायेगा । किन्तु इसका श्रेय मास्टर प्रभुदयाल को ही है, जिन्होंने इस पुण्य के लिए परिवार छोड़ा, जाति छोड़ी, जन्म स्थान छोड़ा, सुख और आराम छोड़ा और अन्त में अपना जीवन ही देकर सदा-सर्वदा के लिये मानवीय इतिहास मे अमर हो गये ।

मुद्रक—युग-निर्माण प्रेस, गायत्री तपोभूमि, मथुरा ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन-चरित्र जन-मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मङ्गल का मूल आधार है। इसलिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन गाथाओं की अधिकाधिक जानकारी जन-कल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवम् आवश्यक मानी जाती रही है।

युग-निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है, उसमें महामानवों के जीवन-चरित्रों की सीरीज को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन-चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिखकर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन-चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से यह आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयं पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को भी इसे पढ़ावें, सुनावें।

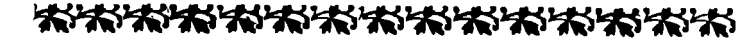

प्रकाशक—'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org